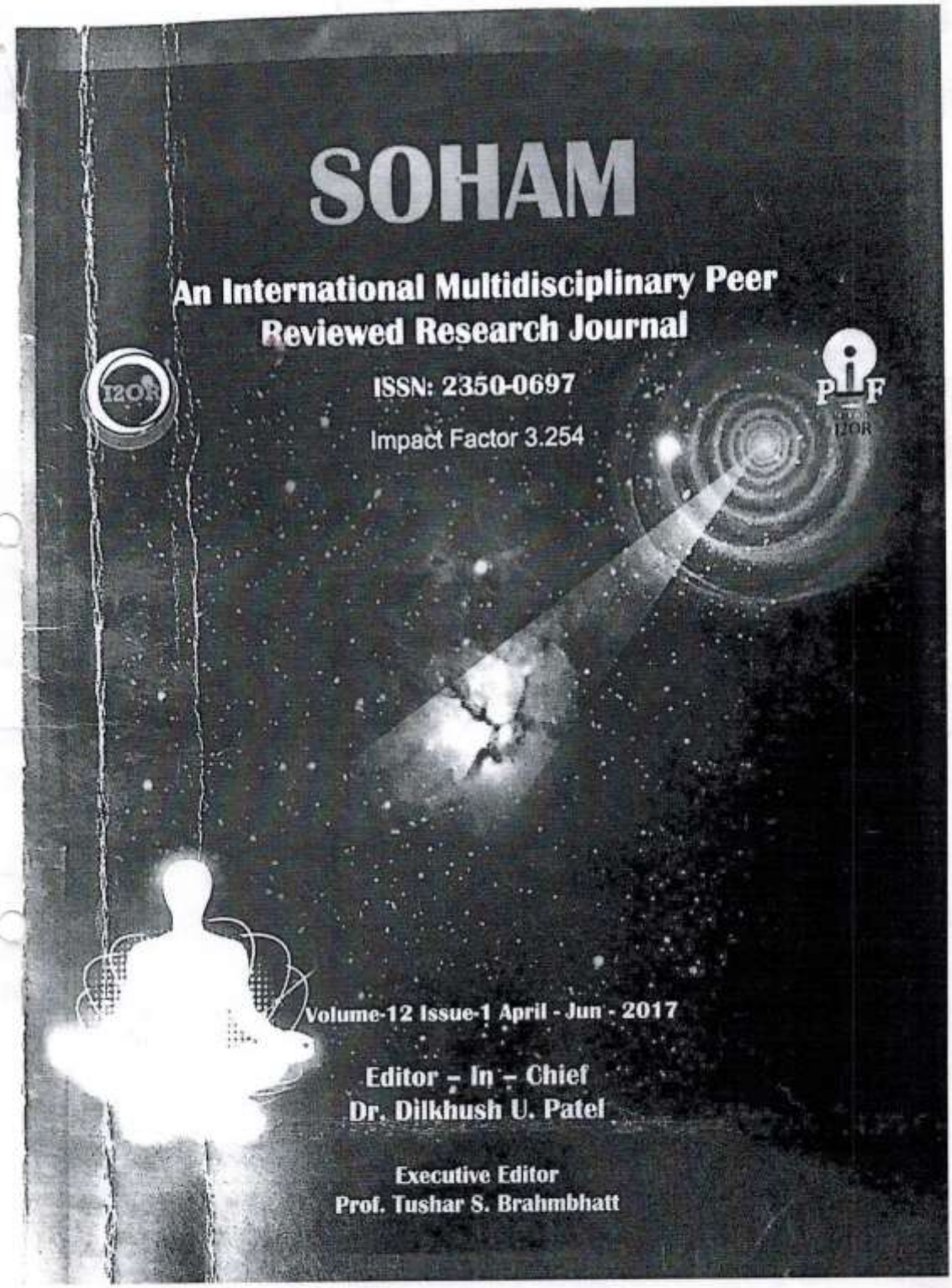

Scanned with CamScanner

Volume XII, Issue I, Jan. - March: 2016

ISSN: 2350-0697
Impact Factor (IIJIF): 3.254

EDITORIAL BOARD

Editor – In – Chief

Dr. Dilkhush U. Patel
(MA, PhD)

Principal
V.N.S. Bank Ltd. Arts and Commerce College
Vadnagar, Gujarat

EXECUTIVE PUBLISHER & MANAGING EDITOR

Executive Editor

Prof. Tushar S. Brahmbhatt
(MA (ELT), MPhil (ELT), PhD (Eng.))*

Department of English Language and Literature
V.N.S. Bank Ltd. Arts and Commerce College
Vadnagar, Gujarat

MEMBERS OF ADVISORY BOARD

Dr. Dipuba H. Devda (Ph.D.)

Pro. Vice-Chancellor
Hemchandracharya North Gujarat University, Patan

Dr. Dilip Patel (Ph.D.)

Registrar
Hemchandracharya North Gujarat University, Patan

Dr. Hanif G. Nandoliya (Ph.D.)

Head, Dept. of Psychology
V.N.S. Bank Ltd. Arts and Commerce College, Vadnagar, Gujarat

Dr. Dinesh N. Patel (Ph.D.)

Assi. Professor, Dept. of Accountancy
V.N.S. Bank Ltd. Arts and Commerce College, Vadnagar, Gujarat

Scanned with CamScanner

ISSN: 2350-0697
Impact Factor (IIJIF): 3.254

CONTENT OF THE TABLE

Sr. No.	Title of the Paper	Author	Page No.
1	Economy of Gujarat	Pro. P.R.Patel	01
2	Financial Performance Appraisal of the Ghandhidham Mercantile Co-Operative Bank Ltd. (GMCBL) with reference to common size analysis	Dr.Laitbhai Parmar	06
3	ब्रह्मपुराण में वर्णित(देवता) शिव	डो. सुरेखा के. पटेल	09
4	पातंजल योग में अष्टांगयोग की उपयोगीता	Dr. Varshaben H Patel	17
5	उपनिषदो में आत्माका स्वरूप	प्रा.जयाबेन सी.परमार	23
6	कविता की मौत' में भारती का आस्थावादी स्वर	डॉ.सुरेश पी. पटेल	30
7	ચારૂદત્તમાં નિરૂપિત લલિતકલાઓ	ડૉ. બી.જી. પટેલ	33
8	'ભારતમાં મનોરંજનના માધ્યમોમાં સિનેમાનો પ્રારંભ'	ડૉ. મહેશ બારોટ	40
9	ભરૂચ પૌરાણિક અને ઐતિહાસિક પરિપ્રેક્ષ્યમાં	ભૂપેન્દ્રભાઈ એસ. પટેલ	46
10	શિવમહાપુરાણ'માં શિવતત્વ	પટેલ જિતેન્દ્રકુમાર વીરચંદભાઈ	50
11	આચાર્ય હેમચંદ્રની સ્તોત્રકૃતિઓમાં ભક્તિ	પ્રો. વીણા એસ. રાજ	53
12	શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતા અને ઉપદેશસાહસ્રીની તુલના : ક્ષેત્ર-ક્ષેત્રજ્ઞના સંદર્ભમાં	પ્રા. બાબુભાઈ એચ.વણકર	56
13	'મંગલસૂત્ર' – કલ્યાણ કે બંધન	પટેલ અર્ચનાબેન એ	59

Scanned with CamScanner

Volume XII, Issue I, Jan. - March: 2016

ISSN: 2350-0697
Impact Factor (IIJIF): 3.254

ब्रह्मपुराण में वर्णित (देवता) 'शिव'

डो. सुरेखा के. पटेल

संस्कृत विभाग,

जी.डी. मोदी आर्टस्स कोलेज,पालनपुर

प्राचीन भारतीय इतिहास के विभिन्न फलको में अनेक युग अन्तर्निहित है । उनमें से वैदिक युग के पश्चात् पौराणिक युग महत्त्वपूर्ण है । वैदिकयुगीन समाज तथा संस्कृति पुराणयुग में अनेक परिवर्तनों और आधुनिकताओं को लेकर निर्मित हुई । वैदिक वाङ्मय भारतीय संस्कृति का परिचायक है, किन्तु वेदों की कठिन भाषा को जनसाधारण तक पहुँचाने का श्रेय पुराण वाङ्मय को ही प्राप्त होता है । ऋग्वेद के मन्त्र (७/१००/३) में विष्णु के अवतार की सूचनामात्र है, लेकिन ब्रह्मपुराण, वामनपुराण तथा अन्य कई पुराणो में वामनावतार का विस्तार से वर्णन किया गया । (ब्रह्मपुराण: अ.९) वेदो के समान सृष्टि, प्रलय, वंश आदि का तत्त्व बतानेवाली विद्या ही पुराण-विद्या है । यह विद्या अनादि है ।

पुराण का मूल अर्थ है – 'प्राचीन'[१] 'पुराऽभ् आख्यानम्' के अनुसार पुराण शब्द का अर्थ है- 'प्राचीन आख्यानम्' । 'अथर्ववेद' (११/७/२४) और 'छान्दोग्य उपनिषद' (७/१/२) में भी यह शब्द इसी अर्थ में प्रयुक्त है । यास्क अनुसार पुराण का निर्वचन - 'जो प्राचीन होने पर भी नवीनता से युक्त हो' (निरुक्त: ३/१९) संस्कृत साहित्य में पुराणों की संख्या सर्वसम्मति से १८ की मानी गई है । (शिव.पु.:१/१/२/४२) ब्रह्मपुराण, पद्मपुराण, विष्णुपुराण, वायुपुराण, शिवपुराण, भागवतपुराण, नारदपुराण, मार्कण्डेयपुराण, अग्निपुराण, भविष्यपुराण, ब्रह्मवैवर्तपुराण, लिङ्गपुराण, वराहपुराण, स्कन्दपुराण, वामनपुराण, कूर्मपुराण, मत्स्यपुराण, गरुडपुराण और ब्रह्माण्डपुराण । नारदपुराण में १८ पुराणों के नाम इसी क्रम से निर्दिष्ट है ।[२] 'देवीभागवत' पुराण में अतिसंक्षेप में पुराणों के विषय में बताया गया है ।[३] समस्त ज्ञान का भण्डार होने के कारण ही पुराणों को भारत की सभ्यता, संस्कृति, वैभव आदि का दर्पण कहा गया है । पुराण स्वयं ही पुराणों की महत्ता बताते है । 'देवीभागवत' पुराण में कहा गया है –'श्रुति और स्मृति दो नेत्र है और पुराण हृदय है ।'[४] 'विष्णुपुराण' अनुसार –'ब्रह्मपुराण अष्टादशपुराणों में सर्वप्रथम है ।'[५] 'अन्य कई पुराणो में भी ब्रह्मपुराण को प्रथम पुराण के रूप में स्वीकार किया गया है ।'[६]

भागवत पुराण (१२/१३/४), ब्रह्मवैवर्तपुराण (कृष्णजन्मखण्ड : १३३/१०) और ब्रह्मपुराण अनुसार 'ब्रह्मपुराण' की श्लोकसंख्या दशहजार और 'अग्निपुराण' अनुसार पच्चीस हजार होनी चाहिए । (अग्निपुराण : २७२/१) जबकि 'मत्स्यपुराण' अनुसार श्लोकसंख्या तेरह हजार है । किन्तु, आजकल उपलब्ध ब्रह्मपुराण की संख्या तेरह हजार सातसो त्र्यासी (१३,७८३) है । प्रचलित 'ब्रह्मपुराण' में २४६ अध्याय है ।

'ब्रह्मपुराण' की कथा के अन्तर्गत विश्वकी सृष्टि, आदि पुरुष मन तथा उसकी सन्तान की उत्पत्ति, देवों तथा असुरों का प्रादुर्भाव एवं दक्षादि की उत्पत्ति का वर्णन है । तदनन्तर भगवान सूर्य के वंश का वर्णन, राम के चतुर्व्यूहावतार का उल्लेख, चन्द्रवंश का वर्णन, चन्द्रवंश का वर्णन एवं जगदीश्वर कृष्ण का चरित्र और द्विपों, नदीयों, वर्षा, पाताल,

Scanned with CamScanner